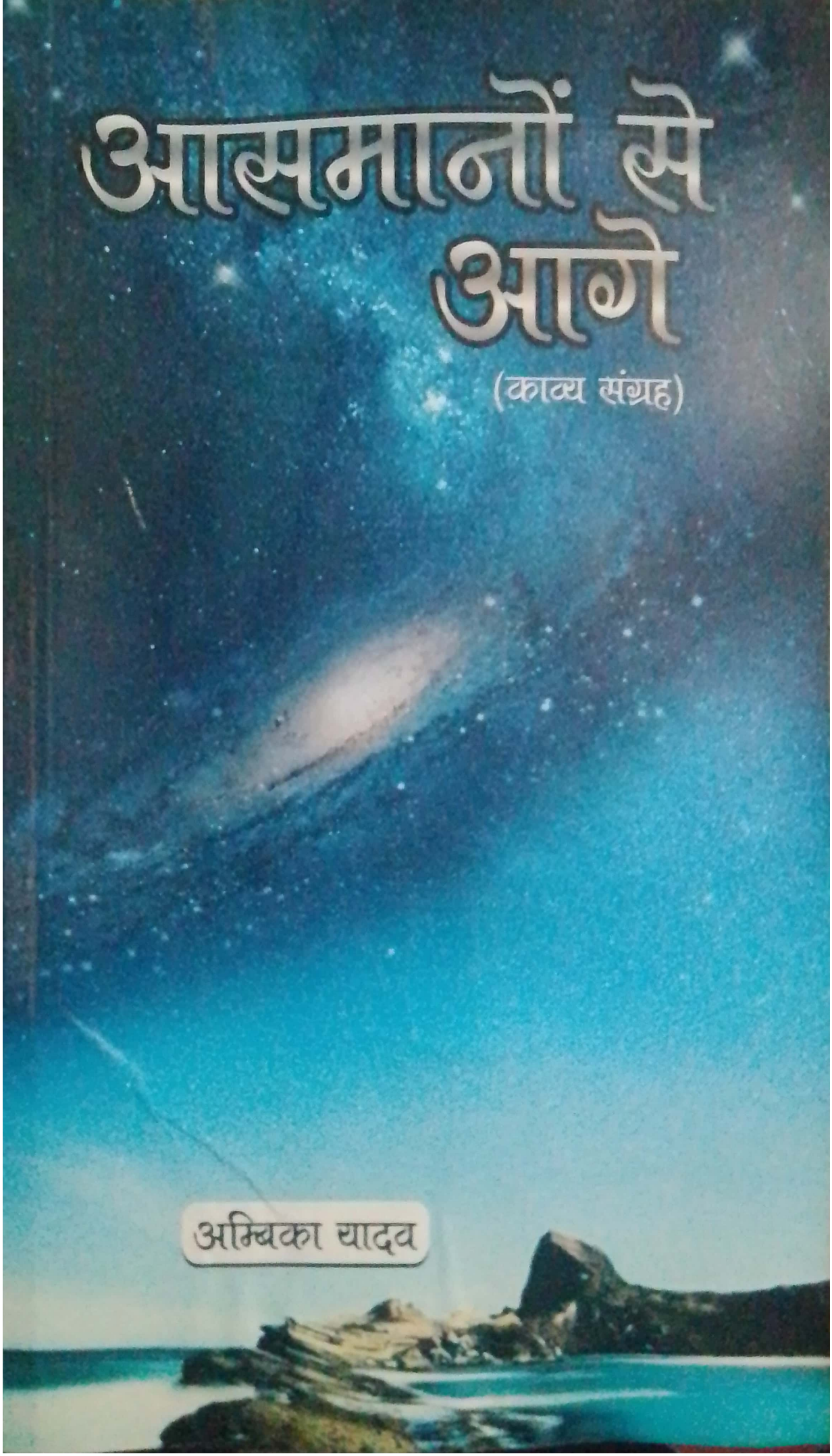

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1.	जितने बार पढ़ा, उतनी बार नई	22
2.	सादगी का आलम ऐसा, हर मोड़ पे	23
3.	वादे हैं तारीखों की तरह	24
4.	पत्थरों को काटने कागज की	25
5.	सुकून आज जन्नत सा पाया है	26
6.	बम फट रहे हैं, पटाखों की तरह	27
7.	बस एक आदमी से ज्यादा डरता हूँ	28
8.	जम्हूरियत का ये सच्चा किस्सा है	29
9.	जिस्म अब नुमाइश करने लगे	30
10.	कमसिन नहीं अब गजल बोल्ड हो	31
11.	एक तहरीर पानी पे लिख दी है	32
12.	चाँद न सही, उसका उजाला मिल	33
13.	अगर तुझे अपने आप पे भरोसा है	34
14.	पानी पे तेरा नाम लिखता हूँ	35
15.	आँसू भी मझधार में छोड़ निकल	36
16.	समन्दरों को मीठा करने की चाहत	37
17.	अपने फैसलों पे हँसता रहा	38
18.	इक्कसवी सदी, ईमेल का जमाना है	39
19.	रोशनी की रफ्तार से तेज चलता है	40

Scanned with OKEN Scanner

20. आँसू रूठकर जहन में चले गए

21. यह भी एक रास्ता है, मंजिलें पाने का

22. उस चिराग की उम्र क्या है

23. सच बोलकर पश्ता रहा हूँ मैं

24. शक अब यकीन में बदलने लगा

25. अपनी जिन्दगी की किताब खोल

26. सुबह सूरज की बंदगी को लोग

27. वो सोचते है अब, सियासतदारों की

28. उम्मीदों को जगने दो, रात अभी

29. हर एक इंसान शंहशाह, किस दौर

30. मुजरिम थे कभी, अब मुन्सिफ हैं

31. इतने गुम्बद खंडहर हुए इस शहर

32. जमाने का तकाजा है, सच न बोला

33. जितना संभलकर चलते हो

34. हम तो नदी के एक किनारे हैं

35. दिल मिलें न मिलें, आँख तो

36. पाबन्दियों में जहां बोलना, बैठना

37. धूप, चाँदनी और इल्म बाजार में नहीं

38. दुनिया से जात-पात मिट जाये तो

39. इश्क की तालीम, किसी मदरसे में

40. खुश रहें उसमें, हमें जो मिला है

Scanned with OKEN Scanner

41.	दुनिया में मुश्किल कुछ भी नहीं	63
42.	प्लास्टिक के फूलों से सजा, बंगला	64
43.	ये दिल कभी खाली नहीं रहता हैं	65
44.	ज्यों-ज्यों हवा मेरे खिलाफ चलने	66
45.	ज्यादातर तो जंग की बातों से डर	67
46.	रोशनी के लिए भी तो आंखे चाहिए	68
47.	चांद न सही, उसका उजाला मिल	69
48.	चादरें चढानें का चलन हैरान कर गया	70
49.	इन परिन्दों को इश्क सिखाया	71
50.	अंधेरी रात में रोशनी मिल जाती	72
51.	पानी पे खिचीं लकीर नहीं मिलतीं	73
52.	जिन्दगी का हर हरफ पसीने से	74
53.	हकीम तुम्हें पता है, दवा क्या है	75
54.	रोटी और हुस्न की गजल आज भी	77
55.	हर दौर के, अपने रावण कंस हैं	78
56.	कायदे का, बेकायदा का, पैसा, पैसा	79
57.	हिम्मत, इजहारे मुहब्बत न भूल	80
58.	हवा का रूख एक पल में बदल	81
59.	पहना नया लिहाफवो खुशमिजाज	82
60.	नर्क नफरत, प्यार जन्नत, बस यही	83
61.	कांटे भी अहमियत जताते हैं	84

Scanned with OKEN Scanner

62. चलो कुछ समय अपने लिए निकाला
63. शरारत करने को उकसाते हैं आंखो
64. रिश्तों के झमेले में उलझी दुनिया
65. बरसात में ज्यों नदी उफनती हैं
66. सुबह जरूर हुई, रात का सपना नहीं
67. गैरत को रख दिया, उतारकर किनारे
68. खत मेरा कोरा, पढ़कर लौटा देना
69. हवाओं के महल बना कर हँस लिया
70. सफर की दास्ताने पत्थरों पे लिखी
71. हम तो तैयार थे अकेले गम उठाने
72. काश घनघोर अंधेरा होता
73. बहते हुए पानी सा चलता हूँ
74. अब गजल को कहाँ आराम हैं
75. यार से हार का वादा है
76. तू मेहरवानियां नहीं, हिम्मत दे दे
77. दरिया की तरह हम अपना रास्ता
78. बगीचों में फूलों की, कीमत नहीं
79. मेरे जिस्म का हिस्सा है, जान की
80. रिश्ते सब सुविधा के लिए, एक दिन
81. कुछ लोग दिल की बाते, बुतों को
82. तुमसे बिछड़ने का वक्त आ गया

83.	उस पत्थर को फूल की शक्ल में	106
84.	जिन्दगी का सफर कहां ले जायेगा	107
85.	आसमान में इतने, सितारे क्यों हैं	108
86.	खुशियां छोटी-छोटी जहाँ मिलें	109
87.	हाथ का तकिया, अखबार का बिस्तर	110
88.	मैं तो बस सोता हुआ समन्दर हूँ	111
89.	वो सफर कर गये, लोग हैरान हैं	112
90.	परेशानियों का जिक्र दोस्तों के सामने आ गया	113
91.	धूप की चादर पहन, पत्थरों को तोड़ते हैं	114
92.	जिस्म की नुमाइश एक जलसा है	115
93.	वो जब फल खाये, समझो बीमार है	116
94.	अकेले हो और हौसला बढ़ाना होगा	117
95.	मरे हुओं का मावजा बट रहा जलसों में	118
96.	हर कदम संभल के रखना होगा	119
97.	भूख से मरे बच्चे, अनाजो के भंडार हैं	120
98.	ईद के चाँद की तरह मिलते हैं	121
99.	मौसम बदल रहा, हवा भी बदलने	122

Scanned with OKEN Scanner

अम्बिका यादव

जन्म स्थान : सागर, म.प्र.

जन्म : 1-02-1950

शिक्षा : बी.ए. (सागर विश्वविद्यालय)

माता : श्रीमती बेनीबाई यादव

पिता : श्रीमान् भागीरथ यादव

संप्रतिः पूर्व शाखा प्रबंधक (कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक), कार्टूनिस्ट, लेखक। वर्तमान में अध्यापक, इंक मीडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन एण्ड आई.टी. सागर, म०प्र०। 'आसमानों से आगे' शीर्षक से अम्बिका यादव की काव्यकृति अपने में वैविध्य से भरी है। कबीर की तरह कई जगह जीवन के सार्थक व गहरे संदेश भी हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से तीखे व्यंग्य बाण छोड़े हैं। कई रचनाएं अंदर तक भेदती हैं तो कई जगह प्रेम, मुहब्बत के फलसफे हैं। कुल मिलाकर जीवन के सारे रंगों का कैनवास है उनकी रचनाओं में।

डॉ. आशीष द्विवेदी
इंक मीडिया इंस्ट्टीयूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन
एंड आई.टी. सागर (म.प्र)

सम्पर्क : अम्बिका यादव
मोबाइल: 9993301091, 8109110283
ईमेल : ambikayadav1250@gmail.com

Kavya काव्या पब्लिकेशन्स
SDR INNOWAYS INDIA PVT. LTD.
ISBN: 978-93-88256-45-2
₹160/-
9 789388 256452
Mail: info@kavyapublications.com, Website: www.kavyapublications.com

Scanned with OKEN Scanner